यात्रा

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष -2 / अंक -23 / मई -2023

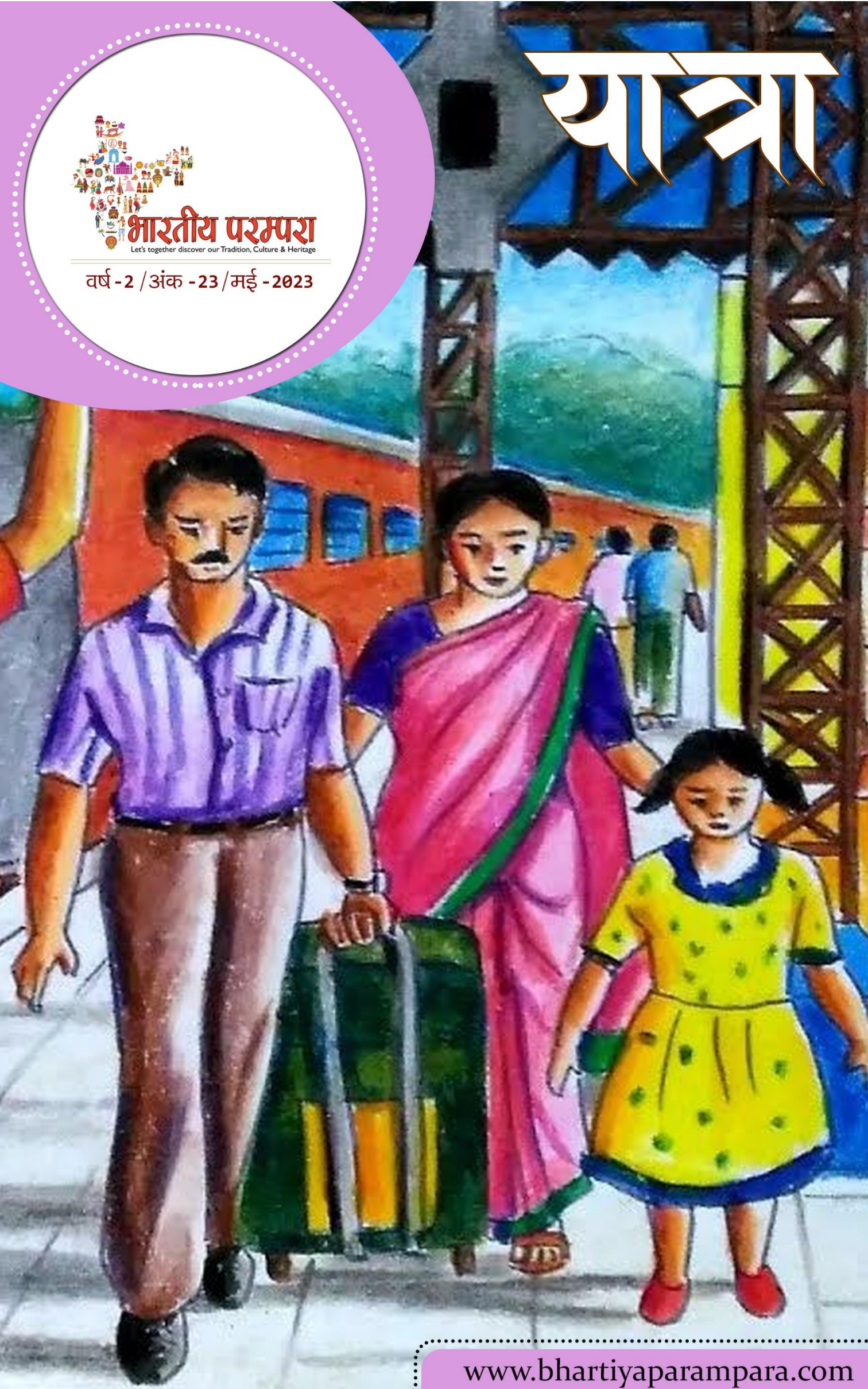

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष -2/अंक -23/मई -2023

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

माह मई २०२३

साका कैलेण्डर -1945 | विक्रम संवत -2080 | अयान - उतरायण | ऋतु - ग्रीष्म

सोम	01 बैशाख शु. एकादशी, मोहिनी एकादशी व्रत	08 ज्येष्ठ कृ, तृतीया	15 ज्येष्ठ कृ, एकादशी, अपरा एकादशी व्रत	22 ज्येष्ठ शु. तृतीया, राजा राम मोहन राय जंयती	29 ज्येष्ठ शु. नवमी, महेश नवमी, गंगा दशहरा
मंगल	02 बैशाख शु. द्वादशी	09 ज्येष्ठ कृ, चतुर्थी, एकदंत संकष्टी चतुर्थी	16 ज्येष्ठ कृ, द्वादशी	23 ज्येष्ठ शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी	30 ज्येष्ठ शु. दशमी
बुध	03 बैशाख शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	10 ज्येष्ठ कृ, पंचमी	17 ज्येष्ठ कृ, त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्री	24 ज्येष्ठ शु. पंचमी	31 ज्येष्ठ शु. एकादशी, निर्जला एकादशी व्रत
गुरू	04 बैशाख शु. चतुर्दशी	11 ज्येष्ठ कृ, षष्ठी	18 ज्येष्ठ कृ, चतुर्दशी	25 ज्येष्ठ शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	
शुक्र	05 बैशाख शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, बुद्ध पूर्णिमा, चंद्र ग्रहण	12 ज्येष्ठ कृ, सप्तमी	19 ज्येष्ठ कृ, अमावस्या, वट सावित्री व्रत	26 ज्येष्ठ शु. सप्तमी	
शनि	06 ज्येष्ठ कृ, प्रतिपदा, नारद जयंती	13 ज्येष्ठ कृ, अष्टमी,मासिक कृष्ण जंमाष्टमी कालाष्टमी	20 ज्येष्ठ शु. प्रतिपदा	27 ज्येष्ठ शु. सप्तमी	
रवि	07 ज्येष्ठ कृ, द्वितीया, विश्व हास्य दिवस	14 ज्येष्ठ कृ, दशमी, मातृ दिवस	21 ज्येष्ठ शु. द्वितीया	28 ज्येष्ठ शु. अष्टमी,मासिक दुर्गाष्टमी	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

वैशाख मास की पूर्णिमा जन्मा एक सितारा।
शांतिदूत, अहिंसा पुजारी था वह विष्णु अवतारी।
नाम जन्म का था सिद्धार्थ, आगे जाकर बुद्ध कहलाया।
इसीलिए वैशाख पूर्णिमा कहलाती है बुद्ध पूर्णिमा
नेपाल राज्य की लुंबिनी थी, जन्मभूमि प्यारी।
क्षत्रिय शाक्य वंश में जन्मे, राजा शुद्धोधन के पुत्र।
ममतामई मात महामाया के आँख के तारे।
बाल्यकाल में गृह को त्यागा, राज्य का मोह ना रोकने पाया।
अर्धांगिनी यशोधरा त्यागी पुत्र राहुल भी सोता छोड़ा।

वय केवल सत्ताइस की थी, बन गए बुद्ध सन्यासी कहलाए।
धर्म एक बनाया बुद्ध ने बौद्ध धर्म कहलाया वह।
बौद्ध धर्म के संस्थापक थे, सबके मन को भाया वह।
अनमोल वचन उनके थे यह है, मानव का कल्याण करो।
ज्ञान में शांति रहेगी सदा स्मरण। प्रभु का सदा रखो तुम।

सुख दुख दोनों आने जाने ना कोई स्थाई है ।
बुरे समय का करो सामना बात सभी को बतलाई।
सच का देना साथ सदा तुम, प्रेम की धार बहाते रहो।
अच्छा सोचो अच्छा करना, घृणा नहीं किसी से करना।
हत्यारा अंगुलिमाल बना बौद्ध का अनुयायी,
आम्रपाली नृत्यांगना भी बोद्ध शरण में आयी।
बनी भिक्षुणी बौद्ध धर्म की।
उसने किया धर्म प्रचार।

बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे की तपस्या।
आत्म ज्ञान की प्राप्त हुई तब सफल हुई तपस्या।
बौद्ध धर्म में ना कोई जाति ना कोई पाँति।
ना कोई ऊंचा ना कोई नीचा सभी यहाँ बराबर है।
साँची, गया, श्रीलंका में भी बने हुए हैं बौद्ध स्तूप।
बौद्ध की वाणी समसामयिक इसको भूल न जाना तुम।

शांति ज्ञान की ज्योति जला कर
चला गया महामानव।
आओ नमन करें करें हम सब मिल
बुद्ध पूर्णिमा दिवस है प्यारा

– उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

हम जो आजकल विज्ञान की अद्भुत शोध का उपयोग कर के जीवन को आसान बनाने की कोशिश कर रहे हैं क्या वह सिर्फ हमारी मदद ही करते हैं या हमारा वह नुकसान कर रहा हैं जो पीढ़ियों तक भरपाई नहीं हो पाएगी। जिसके लिए हम खुद जिम्मेदार हैं। कितने जिम्मेदार हैं ये तो भविष्य ही बताएगा। वैसे तो अगर पुराने जमाने में आई नई शोधों की बात करें तो – जब स्टील के बर्तनों का नया उपयोग शुरू हुआ था तब लोग उसे हृदय रोग के हमले के साथ जोड़ दिया करते थे। तब हम छोटे छोटे थे, लोग उसमें खाना नहीं पकाने की सलाह देते थे क्योंकि उसमें बना खाना खाने से हृदय रोग से ग्रस्त हो जाने की संभावना बढ़ जाती हैं। वैसे ही खाना बनाने वाली गैस का उपयोग नया नया शुरू हुआ था तो उसे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता था।

हम छोटे थे तो रेडियो सुने जाने के लिए भी कुछ नियम थे जिसमें हम कुछ कार्यक्रम ही सुन सकते थे। जब कॉलेज में आये तो टी वी देखने में भी कुछ नियम थे और कुछ ही कार्यक्रम देखने की इजाजत मिलती थी। वैसे भी दूरदर्शन का प्रसारण ज्यादातर शाम के वक्त ही हुआ करता था जो आज 24 घंटे और वह भी ढेरों चैनलों के साथ हो रहा है। ऊपर से नेटफ्लिक्स जैसे प्लेटफार्म पर दिखाए जाने वाले प्रोग्राम जो अनगिनत हैं। जिससे बच्चों और युवाओं का मन उसी में रमा रहता हैं कोई भी अपने विकास के बारे में सोचने से ज्यादा इन्हीं में उलझे रहते हैं।

वैसे ही अब मोबाइल फोन के बारे में बहुत सारी बातें सोशल मीडिया पर पढ़ने को मिल रहें हैं। बड़ों के लिए हानिकारक तो हैं ही किंतु बच्चों के लिए तो ये अत्यंत हानिकारक हैं। इससे बच्चों को लत लग जाती हैं और उनको कोई दूसरी चीज अच्छी नहीं लगती, मोबाइल में ही मन अटका रहता हैं। खासकर जब वे छह साल के या उससे छोटे हैं। **"Under Standing Your Child's Brain"** नाम की किताब में स्टडी करके इस बात को बताया गया हैं।

जब बच्चें रोते हैं, कई प्रकार की जिद्द करते हैं, उनके माता पिता के प्यार की जरूरत हैं तब समय के अभाव में वे उन्हे मोबाइल फोन पकड़ा देते हैं, जिससे वे बहल तो जातें हैं, किंतु ये बहलाना बहुत महंगा पड़ सकता हैं। छोटे बच्चे जब मोबाइल देखते हैं तो वे जो कुछ देखता हैं वह उसे शांति से खाना खा लेते हैं या शांत बैठे रहते है किंतु बड़े होने पर उनकी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता कम होती जाती हैं। उनका ध्यान पढ़ाई से ज्यादा मोबाइल ने लगा रहता है जिससे उनको काफी लत जाती हैं जैसे नशे की आदत होती हैं। **पढ़ाई के समय भी उनका ध्यान उन्ही चीजों में उलझा रहता है, एकाग्रता की कमी रहने से पढ़ाई में ध्यान काम रहता है।**

तंबाकू या शराब के नशे से तो शरीर को तकलीफ होती हैं किंतु इस नशे से दिमाग, हाथ की नाजुक नसें और आँखों का खराब होने का खतरा सदैव रहता हैं।जिसमें दिमाग पर शराब के नशे जितना या नींद की गोली जितनी असर करतें हैं। जब आपका बच्चा सोता नहीं हैं तब क्या उसे आप सोने के लिए ली जानी वाली गोली दे सकते हैं क्या? कोई भी अभिभावक अपने बच्चे ऐसी गोली नहीं दे पाएंगे। लेकिन हाथ में मोबाइल दे कर ये काम हम करते हैं। कई बार तो सुनने को मिलता हैं कि चल चुप तो हो जायेगा दे दो। जो उनके लिए नए बहुत ही हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

कुछ बड़े होने पर उनको कोई न कोई गेम की लत लग जाती हैं जिसने अगर कुछ पैसे लगाने पड़ते हो तो वे माता पिता से चुराने से भी पीछे नहीं रहते। **अपने देश के 41% युवा 20 साल के आसपास की उम्र के हैं। जिन्हें ऐसी लत लगने से उनके भविष्य अंधकारमय हो जाने की पूरी संभावना हैं। जिस उम्र में बच्चे अपने भविष्य के सपने देखता है उस उम्र में मोबाइल पर रील बना कर डालने के शौक में फालतू के स्टंट कर के जिंदगी को जोखिम में डाल देते हैं। अगर देश 41% नागरिक ऐसी लत में उलझ गए तो देश का भविष्य क्या हो सकता है ये बात सोचनीय बन जाती हैं।**

कई बार अभिभावकों को अभिमान होता है कि उनके बच्चे को मोबाइल के कितने फीचर्स का पता हैं, वे वीडियो बना कर फेसबुक या इंस्टाग्राम पर डाल भी देते हैं और इतनी छोटी उम्र के बच्चे की काबिलियत सिर्फ मोबाइल चलाना ही गिनी जाती हैं। पहले उनसे राइम्स आदि बुलाकर माता पिता खुश होते थे। बच्चे सेल्फियां ले कर अपने माता पिता को दिखा खुश करने की कोशिश करते हैं। इस रील्स बनाने की लत तो बिहार के गंगा पथ जो युवक युवतियां स्टंट कर के रील्स बनाते हैं जो वहां यातायात में बाधक बन रहे हैं। आजकल पुलिस के लिए सिरदर्द बना हुआ है, उसे रोकने के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाने पड़ रहे हैं। जिससे ऐसे रील्स बनाने की कोशिश करें उन्हें पकड़ा जाएं।

पहले के जमाने में माताएं बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखती थी। उनकी शरीर और बालों की मालिश किया करती थी, वही समय होता था जब बच्चा मां के करीब हुआ करते थे, अपने मन की बात दिल खोल कर बता दिया करते थे। जो अब मुश्किल से देखना मिलते हैं।

कुछ देशों में तो उम्र के हिसाब से स्क्रीन टाइम का कानून बना है, जिसकी अपने देश में भी आवश्यकता दिख रहीं हैं।

देश के बालधन और युवाधन को इन लतों से बचाना सभी नागरिकों की नैतिक फर्ज बनता हैं।

- जयश्री बिरमी जी, अहमदाबाद (गुजरात)

WHITE BERRY
RESIDENCY
PROUDLY ANNOUNCE
OC
RECEIVED
The Delivery of a Master Piece
1, 2, 3.5 & 4.5 BHK
with Modern Amenities
www.whiteberryresidency.com
98705 80810, 85913 69996
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.

GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
www.kingsweds queens.com
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

132. कर्ण से कवच कुंडल किसने मांगे...?
- पांडवों के हित हेतु, देवराज इंद्र ने ब्राह्मण वेश में कर्ण से कवच व कुंडल मांगे।

133. कर्ण के कवच व कुंडल में क्या विशेषता थी...?
- अमृत से बने हुए रत्नमय कवच व कुंडल कर्ण के जन्म के साथ ही उत्पन्न हुए थे और कवच व कुंडल के रहते कर्ण युद्ध में अजेय था।

134. कर्ण ने कवच व कुंडल के बदले में इन्द्र से क्या मांगा...?
- अमोघ शक्ति। अमोघ शक्ति प्रदान करते हुए देवराज इंद्र ने कहा कि इसे चलाने पर यह गरज-गरज कर तुम्हें अत्यंत संतप्त कर रहे तुम्हारे प्रबल शत्रु को मारकर यह शक्ति पुन: मेरे पास लौट आयेगी।

135. कर्ण द्वारा इस शक्ति का प्रयोग किस योद्धा के वध के लिये सुरक्षित रखा गया...?
- पांडव वीर अर्जुन के लिये।

136. कर्ण द्वारा इस शक्ति से किस योद्धा का वध किया गया...?
- कर्ण द्वारा किये जा रहे पाण्डव सेना के महासंहार को रोकने के लिये श्रीकृष्ण ने घटोत्कच को भेजा। उसने कौरव सेना में विनाश का तांडव मचा दिया। दुर्योधन द्वारा ताना दिये जाने पर कर्ण ने घटोत्कच के वध हेतु अमोघ शक्ति को चलाया। इस प्रकार घटोत्कच ने अपने प्राण उत्सर्ग कर अर्जुन के प्राणों की रक्षा की थी।

137. पाण्डु पत्नी कुन्ती का वास्तविक नाम क्या था...?
- पृथा। पृथा वृष्णि वंश के राजा शूरसेन की पुत्री व श्रीकृष्ण के पिता वासुदेव जी की बहन थी। शूरसेन ने अपनी पुत्री पृथा को दत्तक रूप से राजा कुंती भोज को सौंप दिया। कुन्तीभोज की दत्तक पुत्री होने के नाते पृथा को कुंती नाम से जाना गया। माता का नाम पृथा होने के कारण भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अनेक अवसरों पर अर्जुन को पार्थ नाम से भी संबोधित किया गया।

138. क्या कर्ण कुंती का पुत्र था...?
- एक बार एक तेजस्वी ब्राह्मण, राजा कुंतीभोज के यहां पधारे। कुंती के सत्कार व सन्मान पूर्वक आतिथ्य से प्रसन्न होकर ब्राह्मण ने एक मंत्र कुंती को देते हुए कहा कि इस मंत्र से जिस देवता का आवाहन किया जाएगा वह उसके अधीन हो जायेगा। कुंती ने मंत्र-शक्ति की परीक्षा के लिये सूर्य देवता का आवाहन किया। सूर्यदेव के वरदान से कुंती को सूर्यदेव के समान कवच व कुंडल से सुसज्जित पुत्र की प्राप्ति हुई। चूंकि कुन्ती उस समय अविवाहित थी अत: लोक निंदा के भय से जन्म के साथ ही नवजात को नदी में प्रवाहित कर दिया। यह शिशु कर्ण था।

139. कर्ण का पालन-पोषण किसने किया...?
- कुंती द्वारा नदी में प्रवाहित पिटारी बहते-बहते गंगा तट के चम्पापुरी पहुंची जहां पर उसे नि:संतान दम्पती अधिरथ व उसकी पत्नी राधा ने देखा। उन्होंने कर्ण का लालन पालन किया। कर्ण ने द्रोण, कृप और परशुराम जी से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की।

140. कर्ण के अन्य नाम क्या है...?
- कर्ण के पालक माता-पिता अधिरथ व राधा ने कर्ण का नाम वासु सेन रखा। मित्रता होने पर दुर्योधन ने कर्ण को अंग देश का राजा बनाया इस कारण कर्ण का एक नाम अंगराज भी है। अधिरथ पुत्र, राधेय, सूत पुत्र, सूर्यपुत्र व दानवीर नाम से भी कर्ण को जाना जाता है।

141. द्वैतवन में धर्मराज के अलावा चारों पांडव क्यों निर्जीव होकर गिर पड़े...?
- वन प्रवास के दौरान एक सरोवर से पानी पीने के प्रयास में थके-हारे चारों पांडव निर्जीव होकर गिर पड़े क्योंकि वो सरोवर एक यक्ष का था और यक्ष का यह नियम था कि जो व्यक्ति उसके प्रश्नों का सही उत्तर देगा वह ही पानी पीने के योग्य होगा। उसके आदेश की अवहेलना करने पर व्यक्ति निर्जीव होकर गिर जाता था।

142. चारों पांडव फिर कैसे जीवित हुए...?
- अपने भाईयों को खोजते हुए जब युधिष्ठिर जलाशय के नजदीक पहुंचे तो बिना अस्त्र-शस्त्र के प्रहार के अपने भाईयों को निर्जीव देखकर समझ गये कि मामला कुछ और ही है। उन्होंने अपने भाईयों की तरह जल्दबाजी नहीं दिखायी और न ही यक्ष-चेतावनी की अवज्ञा की। तत्पश्चात युधिष्ठिर द्वारा यक्ष के संपूर्ण प्रश्नों का सही उत्तर देने पर प्रसन्न होकर यक्ष ने चारों पांडवों को पुनर्जीवित कर दिया।

143. वह यक्ष कौन था...?
- वस्तुत: यक्ष के रूप में भगवान धर्मराज ही पधारे थे।

144. प्रसन्न होकर धर्मराज ने युधिष्ठिर को क्या वरदान दिया...?
- तुम में से जो-जो जैसा-जैसा रूप चाहेगा; वह, वैसा-वैसा ही रूप धारण कर लेगा तब तुम्हें पांडवों के रूप में कोई पहचान नहीं पायेगा। इस वर के कारण पांडवों को अज्ञातवास के दौरान कोई पहचान नहीं पाया।

(यक्ष युधिष्ठिर संवाद रूपी प्रसंग के साथ ही महाभारत का तीसरा पर्व - वन पर्व समाप्त हुआ और अब विराट पर्व शुरू होता है।)

(क्रमश:....., अगले माह)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

कभी हारेंगे ना हम!!

सपनों को अपने यूं
बिखरने ना देंगे हम,
माना जीवन पथ पर चलते चलते,
कुछ शिथिल हो गए हैं हम,
परंतु जीवन पथ पर
निरंतर चलना ना छोड़ेंगे हम।
माना चारों और निराशा का घोर तिमिर है,
परंतु उम्मीदों का नन्हा दीपक
बुझने ना देंगे हम।
माना विफलताओं के भंवर में फंसे हैं हम,
परंतु सफलता के लिए
विफलताओं से लड़ना ना छोड़ेंगे हम।
माना जीवन रूपी समुद्र में गोता लगाने पर
बार-बार खाली हाथ लौटे हैं हम,
परंतु सीप का मोती पाने के लिए
अपनी आखिरी श्वास तक
गोता लगाना ना छोड़ेंगे हम।
माना बहुत से सपने पूरे हुए
बहुत अधूरे रह गए, परंतु इन अधूरे
सपनों को पूरा करने के लिए
पुरुषार्थ करना ना छोड़ेंगे हम।
माना भाग्य ने कठपुतली
बना खूब नचाया है हमें,
परंतु अपने हिस्से का उजाला पाने
के लिए
भाग्य से लड़ना ना छोड़ेंगे हम।
सपनों को अपने यूं बिखरने ना देंगे हम।
सपनों को अपने यूं बिखरने ना देंगे हम।

- ज्योत्स्ना नाज़वानी जी, इंदौर (म. प्र.)

अनुलंब

बहुत जी लिए हम
अनुलंब के साथ
बिना किसी निश्चय के
अब बदल लेनी होगी
इस जीवन की राह
बदलने होंगे अपने विचार।

भले ही आते-जाते हों
पल-प्रतिपल विचार
तोड़ने होंगे अब सारे,
अनुलंब के घेरे
अंतस की चाह से
हर शाम, हर सवेरे।

कहीं कोई हिसाब तो होगा
हमारी प्रत्येक सांस का
पल-पल का
जीवन के प्रत्येक दिन का
वह घड़ी भी आएगी
अवश्य आएगी किसी दिन,
बिना कुछ बताए
किसी भी सूचना बिन।

- डॉ नितिला माथुर जी, जोधपुर (राज.)

हो समय तो – आओ, बंधु !
हम बैठे, कुछ बतियाएं ।

पेड़ नीम का – छांव घनेरी
अब भी देता होगा ।
जेठ मास में – नीर नदी का
कलकल बहता होगा ।

हो समय तो – आओ, बंधु !
हम बुधना से मिल आएं ।

घन अषाढ़ के – बंजारों – से
अब भी आते होंगे ।
लोग गांव के – मिलकर आल्हा
अब भी गाते होंगे ।

हो समय तो – आओ, बंधु !
हम धनिया के फिर आएं ।

ख़ुशबू लीपन की – मन पागल
अब भी करती होगी ।
अम्मां चौरे पर – नित दीपक
अब भी धरती होगी ।

हो समय तो – आओ, बंधु !
हम मंदिर तक हो आएं।

– अशोक आनन जी, मक्सी, शाजापुर (म.प्र.)

आधुनिक भारत के जनक - राजा राममोहन राय

भारत सरकार ने गत बार 22 मई 2022 को 22 मई, 1772 को बंगाल के वैष्णव परिवार में जन्मे ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय प्रेस के जनक, भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत और आधुनिक भारत के निर्माता राजा राममोहन राय की 250वीं जयन्ती बड़े ही धूम धाम से मनायी थी।

इस अवसर को और यादगार बनाने के उद्देश्य से बंगाल के हुबली जिले में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू 250 रुपये मूल्यवर्ग का एक स्मारक सिक्का भी जारी किया था।

जैसा आप सभी को ज्ञात ही होगा राममोहन राय जी को मुगल शासक बादशाह अकबर द्वितीय ने **"राजा"** की उपाधि दी थी। इन्हें **संस्कृत, बंगाली, गुरुमुखी** भाषा का तो ज्ञान था लेकिन वर्ण व्यवस्था विरोध के साथ ईसाई धर्म व मिशनरियों के कार्यों की आलोचना वगैरह से नाराज मद्रास के राजकीय कॉलेज के प्रधानाध्यापक शंकरशास्त्री ने जब इनके धार्मिक विचारों से असहमति जता इन्हें शास्त्रार्थ के लिए ललकारा तब इनको **अरबी, फारसी, अंग्रेजी, हिब्रू भाषा** वगैरह का वृहद ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक लगा। इसलिये शास्त्रार्थ में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से पहले तो ये भाषाएं सीखी फिर बाइबल का भी वृहद अध्ययन करने के पश्चात शास्त्रार्थ में सफलता प्राप्त कर काफी नाम व यश कमाया।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि **मूर्तिपूजा का विरोध** प्रकट करने के उद्देश्य को ध्यान में रख इन्होंने मात्र 15 वर्ष की उम्र में ही एक पुस्तक प्रकाशित कर जनता को समर्पित कर दी। इसके बाद वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध भी एक पुस्तक लिखी थी। अपने शुरुआती समय में इन्होंने उस समय की कुछ नामी-गरामी पत्रिकाओं में काम भी किया था और उस दौरान इन्होंने अंग्रेजों की बर्बरता के खिलाफ लेख लिख अपना विरोध सार्वजनिक तौर पर प्रकट करने में पीछे नहीं रहे। इस तरह इन्होंने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की ऐसी नींव रखी जो आज भी समाज में अलख जगाने में बडी ही काम आ रही है। कुछ समय पश्चात जब इन्हें ईस्ट इण्डिया कम्पनी में नौकरी मिल गयी तब वहाँ भी नौकरी करते हुए कभी भी अपने स्वाभिमान, अस्मिता और निडरता से समझौता नहीं किया।

उदाहरणार्थ आपको बताता हूँ वह घटना जिसमें भागलपुर के अंग्रेज कलेक्टर सर फ्रेडरिक हैमिल्टन ने इनके साथ बदतमीजी की तब इन्होंने गवर्नर जनरल लॉर्ड मिंटो को विस्तार से पूरी घटना बता केवल लिखीत शिकायत ही दर्ज नहीं करायी बल्कि ये तभी संतुष्ट हुये जब गवर्नर जनरल ने कलेक्टर को कड़ी फटकार तो

लगायी ही साथ में उनके किए की माकूल सजा भी दी।

ये राजा राममोहन राय ही थे जिन्होंने **बाल विवाह के साथ सती प्रथा के विरोध** में अनेक समाज सुधारकों को अपने साथ केवल जोडा ही नहीं बल्कि विभिन्न जगहों पर उन सभी के माध्यम से समाज को जागरूक करने का एक अभियान चलाया था। इसके अलावा इन्होंने उस समय के **गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैटिंग की मदद लेकर सती प्रथा के खिलाफ एक कानून तक बनवा दिया था।**

राजा राममोहन राय ने अपने जीवन काल में अनेकों धार्मिक सुधारों के अलावा नारी जाति को बेमेल विवाह, बहुविवाह, सती प्रथा, वेश्यागमन, जातिवाद, अस्पृश्यता आदि जैसे कुरीतियों से मुक्ति दिलाने का यथासंभव प्रयास किया।

आपको यह जानना भी आवश्यक है कि उस समय समुद्र पार कर विदेश जाना एक धार्मिक अपराध माना जाता था लेकिन इन्होंने उस दकियानूसी मान्यता की अनदेखी कर विदेश जाकर उस रूढ़िवादी परम्परा को समाप्त करने में अग्रणी भूमिका निभाई। इन्हीं सब कारणों के चलते सभी का मानना है कि इनके द्वारा उस समय से चालू की गयी जागरूकता का ही परिणाम है कि आज हम इन सबसे मुक्त हो पाये हैं।

राजा राममोहन राय ने उस समय ही **कृषि सुधार जिसमें लगान कम करना** वगैरह के साथ प्रशासनिक व्यय कम करने पर सभी को एकजुट राय बना, कार्यान्वित करवाने में एक महती भूमिका निभाई।

निष्कर्ष में मुझे यह लिखने में किसी तरह का संकोच नहीं है कि **राजा राममोहन राय द्वारा मानवता के लिये किये गये कार्यों के कारण हम सभी भारतवासी उनके हमेशा हमेशा के लिये ऋणी रहेंगे।**

– गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, "राजा बाबू", बीकानेर (राज.)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

जिस दिन अपने अपमान का बदला
अपनी सफलता से देना सीख जाओगे
जिंदगी के खेल में जीत जाओगे।

समय जब न्याय करता है
तो गवाहों की जरूरत नहीं पड़ती है।

पत्थर में एक कमी है कि
वो पिघलता नहीं है
लेकिन यही उसकी खूबी है
कि वो कभी बदलता नहीं है।

खामोश रहो या ऐसी बात कहो जो
ख़ामोशी से बेहतर हो।

जरूरी नहीं कि हमेशा बुरे कर्मों की वजह
से ही दर्द सहने को मिले
कई बार हद से ज्यादा अच्छा होने की भी
कीमत चुकानी पड़ती है।

बुरा कैसे बोल दे वक्त को
यही तो सभी असलियत बताता है।

सामग्री – मैंगो पल्प 2 कप, ताजा गाढ़ा दही एक कप, ताजा दूध (कच्चा बिना उबला हुआ) एक कप, ताजी क्रीम की मलाई 2 टेबल स्पून, चीनी 3 टेबल स्पून, केसर चुटकी भर, नमक चुटकी भर, बर्फ आवश्यकतानुसार।

विधि – सभी सामग्री को अच्छी तरह से मिलाकर, मिक्सर में ग्राइंड करें व लस्सी बनाइए ऊपर से थोड़ा केसर डालकर सजा के पेश कीजिए।

इसी तरह से आप संतरे का पल्प डालकर संतरा लस्सी भी बना सकते हो।

रसोई युक्तियाँ –

1) उड़द की दाल कड़क धूप में सुखाने से जल्दी पकती नहीं है।
2) हींग पाउडर चुटकी भर लेकर आधे गिलास पानी में मिलाने से अगर पानी सफेद हो गया है तो हींग शुद्ध है।
3) इलायची छिलके उतारने के बाद छिलके चाय या कॉफी के पाउडर के डिब्बे में डाल दें। पाउडर के साथ यह उबलने पर खुशबूदार चाय / कॉफी बनेगी।
4) तेल गर्म करते समय अगर बर्तन में कुछ बूंदे पानी की गिर गया हो तो तेल के छींटे बाहर आते है और हम जल सकते हैं। ऐसे में उसमें मोटा नमक के 2 - 3 खड़े डालने से तेल उछल कर बाहर नहीं आता है।

घरेलू नुस्खे – सुरक्षित और स्वस्थ भोजन (एनीमिया)

अगर हम खाने की आदतों में जरा सी तब्दील लाते हैं तो, हमारे स्वास्थ्य में बड़ा फायदा हो सकता है। जो हम खाते हैं वह केवल हमारी रोज की जिंदगी को ही प्रभावित नहीं करते हैं, परंतु हमारा खाना हमारी जीवन शैली और हमारा जीवन समय भी तय करता है।

लक्षण – थकावट, साधारण कमजोरी, पैर में सूजन, पैर में दर्द।

कारण – खून में हीमोग्लोबिन की कमी।

उपाय – खाने के साथ चाय बिल्कुल नहीं पीना चाहिए। चाय में मौजूद टैनिन खाने में से लौह तत्व को खून में मिलने से रुकता है। खाने के साथ टमाटर सलाद या संतरे का जूस हो तो शरीर खाने में से लौह तत्व को आसानी से ग्रहण करता है। खाने में लौह तत्व (आयरन) की कमी एनीमिया को जन्म देती है। महिलाओं में प्रसूति काल में और बच्चों में भी यह कमी पाई जाती है, क्योंकि दूध और दूध से बने पदार्थों में आयरन की मात्रा बहुत कम होती है। हरी सब्जियां और फलों में लौह तत्व होता है इसलिए हरी सब्जियां भरपूर मात्रा में खाइए।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

विद्यार्थी जीवन और चरितार्थ

हमारे पूरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल अर्थात समय विद्यार्थी काल होता है। इस काल में विद्यार्थी का मन अपने आस पास के वातावरण में हो रही चीजों को जानने के लिए उत्सुक रहता है। इस समय विद्यार्थी का मन कोरे कागज़ की तरह होता है, जिस पर जो कुछ लिखा जाए वह जीवन भर उसके साथ रहता है।

जिस प्रकार एक नन्हे से पौधे को लकड़ी का सहारा दिया जाता है ताकि वह सीधा रह सके और जब संपूर्ण रूप से वृक्ष बन जाता है तब वह एकदम सीधा खड़ा होता है। उसी प्रकार जब विद्यार्थी को उचित समय पर उचित संस्कार मिलते है तो वे उनके भविष्य को सुधार देते है। उचित संस्कार वह उचित संगति ही विद्यार्थी के जीवन की आधारशिला होते है और इसी से उसके चरित्र का निर्माण भी होता है।

अगर विद्यार्थी काल से ही विद्यार्थी के पास उचित संस्कारों का अभाव है तो भविष्य में उसके पास पश्चाताप करने के अलावा कोई रास्ता नहीं होता। चरित्र निर्माण का उचित उदाहरण है: महोदय ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम। कलाम जी को उनके बचपन से एकता, भाईचारा, अनुशासन, आत्मीयता जैसे संस्कार उनके माता पिता, मित्र तथा शिक्षकों से मिले जिसके परिणाम स्वरूप वह एक बड़े वैज्ञानिक एवं हमारे देश के राष्ट्रपति बने। इन सब से ऊपर वह एक अच्छे व्यक्ति बने। हमारा चरित्र केवल हमारे लिए ही उपयोगी नहीं है बल्कि हमारे देश, हमारे समाज को आगे बढ़ाने के लिए भी उपयोगी है।

हमारे तिरंगे को पूरे विश्व में सबसे ऊंचा फहराने के लिए हमें अपनी आने वाली पीढ़ी का उचित ढंग से निर्माण करना होगा क्योंकि उचित संस्कार ही तो देश को श्रेष्ठ देश बना सकते हैं।

इसलिए:

"अगर देश को करना है विश्व पटल पर स्थापित,
तो उचित संस्कारों से करो विद्यार्थी जीवन का हित"।

- प्रगति वसन्दानी (बाल लेखक), ब्यावर (राज.)

पैसों की तंगी से पढ़ाई
बहुत से लोगो ने छोड़ दी
लेकिन शराब, सिगरेट, गांजा
किसी ने नहीं छोड़ा।

भाया हमरा इक दुई सवाल
है- ई ससुरा क्रिकेट
मा काहे कहत हैं
"Catch पकड़ो
Catch पकड़ो"
जबकि "Catch" और
"पकड़ो" दोनों का एकै
मतलब हैं।

गोलू पेड़ पर उल्टा लटका
हुआ था
मोलू ने पूछा - क्या हो
गया ?
गोलू - कुछ नहीं सिर दर्द
की गोली
खाई है कहीं पेट में ना
चली जाये।

यमराज - बोलो प्राणी
तुम्हे कहा जाना है,
स्वर्ग में या नर्क में ?

प्राणी - मेरा मोबाइल
और चार्जर दे दो कहीं
भी रह लूंगा।

अपने देश में
राय देने वालों की
कमी नहीं है
इस बात पर आपकी
क्या
राय है ???

पप्पू नौकर से - बाहर देखो
सूरज निकला है या नहीं ?

नौकर - साहब बाहर अँधेरा
है।

पप्पू - टॉर्च जलाकर देख
मुर्खा।

आइए भारतीय परंपरा के साथ एक और गौरवशाली परंपरा की बात करते हैं इस देश के उपवन में कई जाति के भिन्न-भिन्न फूल खिले हैं और यह अलग-अलग होते हुए भी सभी एक हैं और सभी एक दूसरे के भावनाओं का सम्मान करते हैं।
मानव सभ्यता का जब से विकास हुआ तब से मानव अकेला नहीं रहता। वह परिवार और रिश्ते नातों से बांधकर सुख पूर्वक जीवन यापन करता है।

व्यक्ति को परिवार की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही समाज की भी आवश्यकता है समाज से ही व्यक्ति को पहचान मिलती है इसे हम यूँ समझ सकते हैं व्यक्ति - परिवार - समाज - शहर और देश।

आज मैं माहेश्वरी समाज की बात कर रही हूँ। **माहेश्वरी समाज का उत्पत्ति दिवस जिसे महेश नवमी के रूप में ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाया जाता है।** इसकी शुरुआत ज्येष्ठ शुक्ल 9 युधिष्ठिर संवत 5159 से हुई थी और अभी तक माहेश्वरी समाज के लोग यह महोत्सव मनाते आ रहे है। इस दिन भगवान शिव की आराधना करते है, शोभा यात्रा निकाली जाती है और भी कई सांस्कृतिक कार्यक्रम होते है जहां समाज के लोगो को सम्मानित भी किया जाता है। भारत के राजस्थान राज्य में आने वाले मारवाड़ क्षेत्र से सम्बद्ध होने के कारण इन्हें **"मारवाड़ी"** भी कहा जाता हैं।

कहा जाता है कि सप्त ऋषियों की तपस्या भंग करने पर 72 उमरावों को ऋषियों ने श्राप दिया था और वे पाषाण बन गए । पाषाण बने उमरावों की पत्नियों ने भगवान से याचना की तब भगवान शिव और माता पार्वती ने इन उमराव को नव जीवन दिया। लेकिन उनके हाथों से हथियार नहीं छूटे थे। इस पर भगवान शंकर ने कहा कि सूर्यकुंड में स्नान करो, ऐसा करते ही उनके हथियार पानी में गल गए, और "उन क्षत्रियों के शस्त्र, तलवार और ढालों से लेखन डांडी और तराजू बन गए।" उसी दिन से वह जगह **"लोहागर्ल"** के रूप में प्रसिद्ध हो गयी और आज भी **राजस्थान के सीकर के पास "लोहागढ़" नाम से वह स्थान है।** जहां लोग कुंड में स्नान करके भगवान महेश की पूजा एवं प्रार्थना करते हैं।

माहेश्वरी के 5 अक्षर में आप देखिये म, ह, श, व, र सभी में गठान है जैसे शिव की उलझी जटाओ से ही उत्पन्न है। 72 उमरावों से माहेश्वरी समाज की 72 खापें (गोत्र) बनी और इस दिन को महेश नवमी - माहेश्वरी उत्पत्ति दिवस के रूप में मनाया जाते आ रहा है।

धीरे धीरे ये समाज विस्तृत हुआ और हरेक क्षेत्र में उन्नति करने लगा। समाज संगठित हुआ और समाज का प्रतीक चिन्ह भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाया

गया जिसमे **"सफेद कमल के आसन पर भगवान महेश सांवले लिंग में विराजित शिव पर त्रिशूल एवं डमरु शोभायमान है।"**

सभी देवी देवताओं को प्रिय कमल कीचड़ में खिल कर भी पावन है और कमल पर आसित बिल्वपत्र तीन गुणों का संकेत देते हैं **"सेवा, त्याग और सदाचार"** मानव जीवन को यर्थात करने वाले तीनों गुण और यही भावना रखकर मानव समाज में सेवा देता है तो समाज के शिखर पर पहुंचता है माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति जड़ में समाहित है और शिव और शक्ति का आशीर्वाद है।

1891 में अजमेर स्व. श्री लोइवाल जी किशनगढ़ के दीवान की अध्यक्षता में समाज संगठन की नींव रखी और गौरव एवं गर्व की बात यह है की माहेश्वरी समाज का ये संगठन पहला जातीय संगठन था।

जय महेश के उद्घोष के साथ साथ शुरू हुए समाज के कार्य जो समाज जन की भलाई के साथ मानव हित में भी सहयोगी थे। माहेश्वरी बंधू एकत्रित होकर चिंतन करने लगे और छोटी छोटी सभाओं ने महासभा का रूप ले लिया।

आज 21 वी सदी में हमने यूँ ही प्रवेश नहीं किया। इससे पहले समाज की कई कुरीतियों को जैसे पर्दा प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि, 1929 में पर्दा प्रथा के बहिष्कार की घोषणा की, इस अधिवेशन में महिलाओं की संख्या अधिक थी। 1931 में विधवा विवाह के बारे में के बारे में प्रस्ताव रखा जो 1940 में जाकर पारित हुआ। 1946 में दहेज प्रथा का विरोध और देश में माहेश्वरी समाज ही सबसे पहला समाज है जिसने बाल विवाह को निषेध किया शारदा एक्ट 1930 में 1930 में एक्ट 1930 में दीवान बहादुर हरी विलास जी शारदा अजमेर द्वारा रखा गया।

आज भी माहेश्वरी समाज निरंतर क्रियावान है। समाज द्वारा समाज जन के लिए कई ट्रस्ट बनाये जो समय समय पर समाज जन के लिये काम करते है।

माहेश्वरी जाति का संगठन विस्तार है माहेश्वरी भारत में ही नहीं वरन नेपाल बांग्लादेश अमेरिका और भी देशों में है और अपनी बुद्धि कौशल और योग्यता के आधार पर चाहे वो शिक्षा, राजनीतिक या प्रशासनिक अधिकारी या खेल का मैदान हो कोई सा भी क्षेत्र हो माहेश्वरी किसी से कम नहीं है। जन सेवा में भी आगे रहते है समाज जन। देश के अनेक शहरों में सेवा सदन स्थापित किये और आगे भी अनेक कार्य किये जा रहे है।

खानपान हो या पहनावा या हो संस्कारों की बात तो माहेश्वरीयों का अपना अलग ही अंदाज है।

- संगीता दरक जी, मनासा (म.प्र.)

ट्रेन रफ्तार से दौड़ी जा रही थी और उसके साथ ही मेरे विचारों ने भी रफ्तार पकड़ ली अतीत में छुट्टियों के दौरान की गई यात्राओं के सुखद पल मानस पटल पर अंकित होते ही एक मीठी सी मुस्कान चेहरे पर बिखर गई। अगले ही स्टेशन पर एक सुशिक्षित दंपति और उनका दस वर्षीय बेटा ट्रेन में चढ़े और मेरे सामने वाली सीट पर बैठ गए, वह तीनों ही इस स्लीपर क्लास में बड़े ही असहज महसूस कर रहे थे।

"औपचारिक बातचीत के दौरान उन्होंने कहा भी वातानुकूलित डिब्बे में रिजर्वेशन न मिलने से उन्हें मजबूरन स्लीपर कोच में बैठना पड़ा।" बच्चा भी पहली बार ही स्लीपर कोच में बैठा था यहां की भीड़ में वह बहुत चिड़चिड़ा रहा था जब की संध्या समय सूर्य देव अपनी माया समेट अस्त होने में थे और हल्की पुरवाई अपने पंख पसार रही थी। बच्चा लगातार भनभना रहा था तो तंग आकर उसकी मम्मी ने ऊपर की बर्थ पर बिठाकर उसे टैब पकड़ा दिया वह उसमें आँखे गड़ाए मग्न हुआ तो उसके मम्मी पापा ने चैन की सांस ली।

यह देख मुझे मेरा बचपन याद आ रहा था सफर के दौरान खिड़की के पास बैठ कुदरत का अनुपम दृश्य देखने के लिए मेरा मन कितना लालायित रहता सूरज की लालिमा, चांद की अलग-अलग छटाएं उस बालमन को कितना सुकून देती अपने साथ साथ मानों चांद भी सफर कर रहा हो ऐसा प्रतीत होता, दौड़ते हुए पेड़-पौधे, नदियां, पहाड़ों को देख कल्पनाओं को पंख लग जाते। घर का बना हुआ भोजन, नाश्ता सब मिलजुल करते। खिड़की से बाहर मोटे कपड़े की थैली टंगी रहती जिसमें पूरे समय जल ठंडा रहता उसका माधुर्य आज भी याद है। भाई बहनों संग ताश, सांप-सीढ़ी और न जाने कितने ही खेल खेला करते जिससे समय का पता ही नहीं चलता और हम पूरी ताजगी से भरपूर हो गंतव्य तक पहुंच जाते।

कुछ ही देर में उस बच्चे की मम्मी ने उसे बिसलेरी पकड़ा दी, जिसे उसने गर्म पानी हो गया कहकर बिना पिए ही लौटा दी। अगले ही स्टेशन पर उसके पापा ने ठंडी बिसलेरी की बोटल, कुरकुरे, फ्रुटी आदि खरीदकर उसे दे दी जिसे वह शौक से खाने लगा।

यह दृश्य देख मुझे बरबस ही अपने पापा की याद आने लगी उनके द्वारा लिया हर निर्णय हमारे लिए सर्वोपरि होता वहां जिद पूरी होने की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती वह भी पूरी तरह हर व्यवस्था पूर्ण करने में सक्षम थे किंतु उनका कड़ा अनुशासन अब याद आता है तो लगता है उनके द्वारा हम बच्चों को जीवन का जरूरी पाठ पढ़ाने का ही उनका मकसद रहा होगा। **"आज हर स्थिति में हम भाई-बहन बड़े ही खुश रहते हैं न कोई अभाव महसूस होता है, ना ही कभी निराशा हमें कैद कर पाती है।"**

छोटी छोटी बातों में आज की पीढ़ी, बच्चे जो समस्या महसूस करते है, हर बात का तनाव लेते हैं सच तो वह समस्या होती ही नहीं है, वक्त होता है जो ठहरता नहीं मुश्किल घड़ी भी निकल ही जाती है किंतु अत्याधिक लाड़-प्यार उन्हें कमजोर करने के साथ ही उनका भविष्य भी खराब करता है। इस यात्रा दौरान इतना तो मैं समझ ही गई। तभी आजकल बच्चे जरा जरा सी बात में डिप्रेशन में जाते हैं, हताश हो जाते हैं, जीवनलीला समाप्त करने तक सोच लेते हैं।

एक रात का सफर मनचाहा न होने पर जो असुविधा महसूस करते हैं उनके लिए जीवन सफर में आने वाले उतार चढ़ाव में सामंजस्य स्थापित करते हुए खुशी से चलना मुश्किल ही होगा ऐसे जीवन की डोर ही कमजोर रहती है जो आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक किसी भी असंतुलन को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाती, यह सोच ही रही थी, तभी खिड़की से आ रही शीतल पुरवाई से मेरी आंखों में नींद भरने लगी वह बच्चा अब तक टैब में ही मशगूल था।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

मेरी प्यारी मां
तेरे बिन सब कुछ अधूरा सा लगता
तेरी ममता भरी गोद में सो जाऊं
तेरे आंचल की छाँव में सुकून पाऊं
तुझे देखे बिन खाना ना भाए
तेरी मुस्कान पर सारे तारे मिल जाये
जब भी उदासी छाए तेरा स्पर्श पा के खिल जायूँ
सारा जीवन अधूरा लगता है जब तुझे घर में न देखूं
तेरा आशीर्वाद सदा रहे तो जीवन की हर मुसीबत से लड़ जायूँ
मेरी प्यारी माँ... हर जन्म में तुझे ही माँ के रूप में पाऊं॥

सभी को मातृ दिवस की बधाई

हार्दिक आभार